जीवविचार प्रकरण सह पद्यानुवाद

सर्वोदय ग्रंथावली ६३८

संयोजक -
प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री
सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृत्तिओनी झलक

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

पुस्तक प्राप्ति स्थान

७ विराग-तेजस-ऋजु गांगर ७
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा

८ श्री सोमचंद भाणजी लालका ८
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

५ मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सामायिकमां स्वाध्याय - गुणश्रेणी - ३८

जीवविचार प्रकरणनो मूळ साथे गुर्जर पद्यानुवाद

पद्यानुवाद रचयिता

कच्छ हालार देशोद्धारक - अचलगच्छेश प. पू. आ. भ. श्री गौतमसागरसूरीश्वरजी म. सा. ना प्रतापी पट्टधर कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति प. पू. आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी महाराजा

प्रकाशक

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट

सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)

वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।।

।।श्री महावीराय नमः।।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।
अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ
मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.
प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.
पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

संकलनकर्ता

प.पू. श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म.सा.

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रास्ताविक

आ जगतमां जीव अने अजीव एम बे प्रकारना तत्त्वो जिनेश्वरदेवोए मुख्यरूपे प्ररुप्या छे. तेनो विस्तार एज द्वादशांगी कहीए तो चाले. आश्रव अने बंध ए जीवाजीव संयोगनुं अर्थात् जड-चेतनना संयोगनुं अवस्थान्तर छे. संवर अने निर्जरा ए आत्मानी उज्ज्वळ दशा छे. मोक्ष ए आत्मानुं शुद्ध स्वरूप छे. आ रीते जोता आश्रवादि पांचेय तत्त्वोनो समावेश जीव अने अजीवमां थई जाय छे. पुण्य अने पाप आत्मा साथे संबंध राखनारा कर्मपुद्गलो छे, जेथी पुण्य-पापनो बंधमां अंतर्भाव करीए तो सात तत्त्वो थाय. जेम नवतत्त्वनी परंपरा छे तेम सात तत्त्वोनी पण प्ररुपणा छे. आश्रव अने बंध संसारना कारण अने संवर तथा निर्जरा मोक्षना कारण छे. मुमुक्षुओने आत्मविकासमां आगळ वधवा माटे आ तत्त्वोनुं ज्ञान अत्यंत उपयोगी छे.

नव तत्त्वोमां जीवतत्त्व सौथी प्रथम छे. एटले मनुष्ये तेनुं स्वरूप बराबर जाणवुं जोईए. जीवनुं लक्षण शुं छे? तेना केटला

भेदो छे? केवा शरीरवाळा होय छे? केटला आयुष्यवाळा होय छे? तेमने केटला प्राण होय छे? जीवोनी योनिओ केटली छे? विगेरे विगेरे प्रश्नो जिज्ञासुओना मनमां उठे ते स्वाभाविक छे. जैन महर्षिओए आ बधा प्रश्नोना यथार्थ उत्तरो पोताना दिव्य ज्ञानबळे ग्रंथोमां गुंथी आप्या छे. प्राथमिक कक्षाए आ ज्ञान आपणने जीव-विचार प्रकरण नामनी रचनामां अतीव सुंदरपणे मळे छे. आ प्रकरणना रचयिता श्री शांतिसूरिजी छे जेओ थारापद्र गच्छीय हता तेवो विद्वानोनो अभिप्राय छे.

कलिकाल कल्पतरू जंगमयुगप्रधान अचलगच्छाधिपति परम पूज्य आ. भ. श्री गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा. ए पोताना जीवनकाळ दरम्यान संस्कृत भाषामां २५००० श्लोक प्रमाण अने गुर्जरभाषामां १,००,००० श्लोक प्रमाण गद्य-पद्यमां रचनाओ करेल छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां अमे पूज्यश्रीए रचेल गुर्जरभाषाबद्ध पद्यानुवाद प्रारंभमां आप्यो छे अने पछी जीवविचार प्रकरण मूळ आपेल छे जेथी वाचक-मुमुक्षुओ मूळ गाथाओनो स्वाध्याय अने अर्थनी अवधारणा बन्ने साथे करी शकशे. पूज्यश्रीए रचेलो आ पद्यानुवाद सुंदर अने अर्थगंभीर छे. अचलगच्छना मतिचंद्रजीना छ कर्मग्रंथो पर

बालावबोध मळे छे. नवतत्त्व उपरनो बालावबोध पण उपलब्ध थाय छे. परंतु शेष प्रकरण अने भाष्योनो मळतो नथी, संभव छे के तेमणे जीवविचार, दंडक अने लघु संग्रहणी तथा त्रणे भाष्यो पर पण रच्या ज हशे. भविष्यमां जो संशोधन थशे तो प्रकाशमां जरुर आवशे. जीवविचार विशे वधु ऊंडाणपूर्वक अभ्यास करवा मांगता जिज्ञासुओ माटे आ पुस्तिकाना प्रान्ते जीवविचारने लगता प्राप्त साहित्यनी टीप आपवामां आवेल छे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोनो मूळ साथे पद्यानुवाद सर्वप्रथमवार छपाई रह्यो छे. ते ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे. आ पद्यानुवादने अक्षरशः निरीक्षण करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस. संघवी-पाटणनो तेमज दरेक प्रकरणोना साहित्यनी नोंध आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा पं. जितेन्द्र बी. शाहनो (एल.डी. इन्डोलोजी-अमदावाद) अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२० सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ, २२५ विविध ग्रंथो आम कुल मळीने २५३५ ग्रंथो थाय छे. हमणा सुधी आ कार्य धीमी गतिए चालतुं हतुं ते हवे देव-गुरु पसाये वेगवंतु चालशे एवी आशा छे.

ट्रस्टना निर्णयो

१. हवे पछी बधा ग्रंथो मल्टी कलरमां छपाशे.

२. ग्रंथो माटे दाननी अपील बहार पडशे नहि.

३. अध्ययनमां उपयोगी माहिती अलभ्य बने तो पोस्टल खर्च तथा झेरोक्ष खर्च लईने व्यवस्था करी आपवी.

४. प्रकाशित ग्रंथो कोईने पण भेटमां आपवा नहि.

५. वि.सं २०६७ पछी योग्य समये ट्रस्टनुं विसर्जन करी देवाशे.

अन्ते वाचक वर्गने नम्र विनंति करीए छीए के प्रमादवश आमां कोई त्रुटीओ रही गई होय तो सूचित करशो जेथी पुनरावृत्तिमां सुधारो वधारो करी शकीशुं.

- लि. श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टवती

श्री सोमचंद भाणजी लालका

श्री जेन्तीलाल जेठाभाई मैशेरीना

सादर जयजिनेंद्र

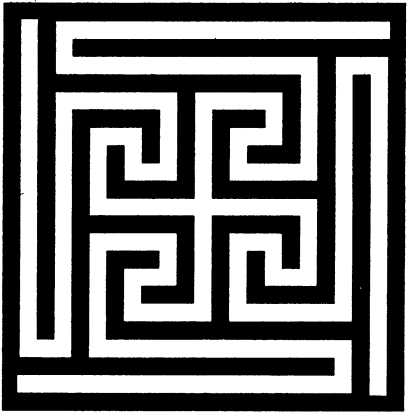

जीवविचारनो गुर्जर भाषामां पद्यानुवाद

वीर जिन नमी जीव भेद कहुं, संक्षेपे प्राक् सूरिवरोदितं
मुक्त संसारी बे भेद स्थावर, त्रस संसारी जिनोदितं
पृथ्वी अप तेउ वाउ वनस्पति,
एकेन्द्रि बि ति चउ पंचेन्द्रिय छे
हवे पृथ्वीकायादि एकेन्द्रियथी पंचेंद्रि जीवो कहेवाय छे १
स्फटिक मणिरत्न विद्रुम परवाळां, तुडी हरताल मनशीला
सुवर्णादि धातु लवणादि खारो पारो, अबरखि सुरमो हिंगुला
खडी रमची अरणेटो मट्टी पत्थर, जातिओ पृथ्वीकाय छे
भौम आकाशी झाकळ हिम करादि जल,
घनोदध्यादि अपकाय छे २
जाल अंगारा तणखा उल्कापात,
वीजळी आदि अग्निकाय छे
उद्भ्रामक उत्कालिक मंडलि महाशुद्ध,
तनुघनादि वाउकाय छे

एक शरीरे अनंता जीवोवाळी, साधारण वनस्पतिकाय छे
कंदा अंकुर किसलय पंचकुगी सेवाळ,
आर्द्रत्रिक सर्व कोमळ फळ छे ३
थोर कुंवार गुग्गुल गडुशिणादि पत्र,
अनेक भेदे अनंतकाय छे
छेदी उगे गुप्त नसो पर्व समभंग, शास्त्र कहे अनंतकाय छे
जस फळ फूल छाल काष्ठ मूळ पत्र बीज,
ए साते स्थाने पृथक् जीव छे
ते एक शरीरे एक जीववाळी बहु भेदे
प्रत्येक वनस्पति(काय) छे ४
वळी आलोकमां प्रत्येक तरु विण,
पृथ्वीकायादि पांचे सूक्ष्म छे
जीवो ए अंतमुहुर्त आयुवाळा अदृश्य छे एकेन्द्रिय छे
शंख कोडा कोडी छीप गंडुल, जळो चंदनक अळशिया
लाळिया क्रमी पोरा धुण, चुडेलादि जीवो छे बेइन्द्रिया ५
मांकड जू कीडी मंकोडा उद्धोही, सावा ईयळ घीमेल तिम

कानखजूरा ईन्द्रगोप गींगोडा विष्टा,
छाण कीडा गोपालिक ईम
धनेडा कुंथुआ गद्धैयादि जीवो, जाणो सावि तेइन्द्रिया
वींछी भमरा भमरी बगाई मच्छर,
डांस माखी तीड करोळिया ६
इत्यादि जीव चोरिन्द्रियो कह्या, हवे कहुं पंचेंद्रिया
तिर्यंच मनुष्य नारक देवो, ए चार भेदे पंचेंद्रिया
सुसुमार काचबा ग्राह मगरो, विविध माछलां जळचरो
बळदादि चोपगा सर्पादि उरचर,
नोळियादि भुजचर स्थलचरो ७
रोमपक्षी चर्मपक्षी खेचरो, नरलोकमां सुप्रसिद्ध छे
नरलोक बही वितत पक्षी, समुद्गक पक्षी एवां पक्षी छे
ए तिर्यंच पंचेंद्रिय कह्या, कहुं मनुष्य पंचेंद्रियो हवे
कर्म-अकर्म भूमिना अंतरद्वीपना, त्रणसो त्रण भेद नर सवे ८
रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुका, प्रभा चोथी छे पंकप्रभा
तिम धूमप्रभा छट्ठी तमप्रभा, सातमी नरक तमःतमप्रभा
साते नरकना आ गोत्र छे, गोत्र नाम प्रमाणे परिस्थिति तस

घमा वंश शेला अंजणा रीठा, मघा माघवती नाम जस ९
दश भवनपति आठ व्यंतर, पंच ज्योतिषी बे वैमानिक छे
ग्रैवेयक अनुत्तर कल्पातीत छे, अन्य देवो कल्पोपपन्न छे
इशान लगी नर जिम विषय सेवी, उपर स्पर्श रूपादि य
हवे देहमान आयुष्य स्वकाय स्थिति,
प्राण योनि संख्या कहेवाय १०
सूक्ष्म बादर पृथ्वी अप तेउ वाउ, साधारण वनस्पतिकाय छे
ए सर्व अंगुल असंख्यातमा, भागे देहवाळा जीव छे
देह बादर प्रत्येक वनस्पतिनो एक,
सहस्र योजन साधिक छे
सूक्ष्म पृथ्वी अप तेउ वाउकायनुं, आयुष्य अंतरमुहूर्त छे ११
सूक्ष्म बादर साधारण वनस्पतिकाय, आयुष्य अंतरमुहूर्त छे
हवे बादर एकेन्द्रियनुं कहुं, पृथ्वीनुं बावीश हजार छे
सात हजार अपकाय त्रि अहोरत्र, तेउकायनुं आयुष्य छे
वाउकायनुं त्रण सहस्र प्रत्येक, वनस्पतिनुं दश सहस्र छे १२
स्वकायस्थिति पृथ्वी अप तेउ वाउ, प्रत्येक वनस्पतिनी छे
ते असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी. साधारण वणनी अनंती छे

सर्व एकेंद्रियोने चार प्राण स्पर्शेंद्रिय, आयु श्वास बळ काय छे
सात सात लाख योनि पृथ्वी अप तेउ,
वाउकायनी भाखी छे १३
साधरण वनस्पति चौद लाख योनि,
प्रत्येक वण दश लाख छे
बेईन्द्रिय देह बार योजन, आयु बार वर्ष स्वकायस्थ छे
संख्यात वर्ष छ प्राण स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय आयुष्य छे
श्वासोश्वास काय बळ वाणी बळ वळी,
योनिओ तो बे लाख छे १४
तेईन्द्रिय देह त्रण गाउ, ओगणपचास दिन आयुष्य छे
स्वकाय स्थिति संख्याता वर्ष, घ्राणेन्द्रिय सह सात प्राण छे
तास योनि बे लाख कही चौरेन्द्रिय, एक योजन देह छे
आयु छ मास स्वकायस्थिति, संख्यात वर्ष आठ प्राण छे १५
चक्षुरिंद्रिय तिम बे लाख योनि, हवे तिर्यंच पंचेंद्रिय छे
ते गर्भज समुर्च्छिम जल थल खेचर, उर भूज परिसर्प भेदे छे
गर्भज समुर्च्छिम जलचरो एक, सहस योजनदेही छे

आयु पूर्व क्रोड वर्ष सात आठ भव,
स्थिति दश नव प्राण छे १६
स्थळचर चतुष्पद गर्भज छ गाउ, त्रण पल्य दश प्राण छे
समुर्च्छिम गाउ पृथकत्व चोर्याशी, सहसाब्द नव प्राण छे
गर्भज उरपरिसर्प योजन सहस, पूर्व क्रोड प्राण दश
समुर्च्छिम योजन पृथकत्व त्रेपन, सहस वर्ष नव प्राण तस १७
गर्भज भुजपरिसर्प गाउ पृथकत्व, पूर्व क्रोड प्राण दश
समुर्च्छिम धनुष्य पृथकत्व बेंताळीश, सहसाब्द नव प्राण तस
गर्भज खेचर धनुष्य पृथकत्व बहुंतेर,
पल्य असंख्यांश प्राण दश
समुर्च्छिम धनुष्य पृथक्त्व बहुंतेर, सहस वर्ष नव प्राण तस १८
सर्व तिर्यंच पंचेंद्रिय सात आठ भव, चार लाख छे योनि तस
गर्भज मनुष्य त्रण गाउ त्रण पल्य, सात आठ भव प्राण दश
समुर्च्छिम अंगुल असंख्यांश, अंतः मुहूर्त सात भव प्राण नव
चौद लाख मनुष्यनी योनि छे,
कह्यां बे गतिनां पांच द्वार रव १९
सर्व नारकोमां स्वकायस्थिति नहि, प्राण दश योनि लाख चार

पहेली नरके पोणा आठ धनु, छ अंगुल देह एक सागर
बीजी नरके साडा पंदर धनु, बार अंगुल देह त्रण सागर
त्रीजी नरके धनु सवा एकवीश, देह आयु सात सागर २०
चोथी नरके धनु साडा बासठ, देह आयु दश सागर
पांचमी नरके धनु सवासो देह, आयु सत्तर सागर
छट्ठी नरके धनु अढीसो देह, आयु बावीश सागर
सातमी नरके धनु पांचसो देह, आयु तेंत्रीश सागर २१
नारकी मरी नारकी न थाय, नारकी देव थाय नहि
तिम देव मरी नहि देव थाय, देव नारकी थाय नहि
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी, वैमानिक देव भेद चार
देवमां स्वकाय स्थिति नथी, दश प्राण योनि लाख चार २२
भवनपति व्यंतर ज्योतिषी, सौधर्म ईशान देह सात कर
दश भवनपतिमां असुरकुमारे, आयु साधिक एक सागर
बाकीना नवमां बे पल्योपम, कांईक उण कहे तीर्थंकर
एक पल्योपम व्यंतर आयुष्य छे, आयु कथन उत्कृष्ट स्थर २३
ज्योतिषी कहुं चंद्र एक पल्योपम, एक लाख वर्ष आयुधर
सूर्य एक पल्योपम एक हजार वर्ष, आयुषी महा तेजधर

ग्रह एक पल्योपम आयु नक्षत्र, अर्ध पल्योपम आयुधर
तारा पा पल्योपम आयु पांचे, असंख्या कहुं वैमानिकवर २४
सौधर्मे बे सागर इशाने साधिक, बे सागरोपम आयु छे
सनतकुमार माहेंद्रे छ हाथ, सात सागर साधिक आयु छे
ब्रह्मलांतक पांच हाथ दश ने चौद, सागरोपम आयु छे
महाशुक्र सहस्त्रारे चार हाथ, सत्तर ने अढार सागर छे २५
आनत प्राणत आरण अच्युते, त्रण हाथ देहमान छे
अनुक्रमे ओगणीश वीश एकवीश, बावीश सागर आयु छे
ग्रैवेयक सुदर्शन सुप्रतिबद्ध, मनोरम सर्वतोभद्र छे
सुविशाळ सुमनस सौमनस्य प्रियंकर, नंदीसर ए नव छे २६
नव ग्रैवेयके बे हाथ देह आयु, वृद्धि एक एक सागर
आयु त्रेवीशथी एकत्रीश सागर, कहुं हवे पांच अनुत्तर
विजय विजयंत जयंत अपरा-जित सर्वार्थसिद्ध छे
एक हाथ देहमान एकत्रीशथी, तेत्रीश सागर आयु छे २७
पथ्वी अप तेउ वाउ वण साधारण, सूक्ष्म बादर भेद दश
बादर प्रत्येक वनस्पति बि ति, चउरिंद्रिय मळी चउदश

जल स्थल खेचर उर भुज परिसर्प,

गर्भज समुर्च्छिम सह चउवीश

पांचसो त्रेसठ भेदमां तिर्यंचना,

पर्याप्त अपर्याप्त अडतालीश २८

सात नरकना सात पर्याप्त अपर्याप्त, मळी चउदश नरकना

पांच पांच भरत ऐरवत महाविदेह, पंदर कर्मभूमि क्षेत्रना

हिमवंत हिरण्यवंत हरिवर्ष रम्यक्, देवकुरु उत्तरकुरु त्रीश ए

त्रीश अकर्मभूमि छप्पन अंतरद्वीप, मळी एकसो एक भेद ए २९

मनुष्यो गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्त, समुर्च्छिम अपर्याप्त छे

गर्भज समुर्च्छिम मनुष्यना मळी, त्रणसो त्रण ए भेद छे

दश भवनपति पंदर परमाधामी, सोळ व्यंतर वाणव्यंतरना

चरस्थिर ज्योतिषी दश, दश तिर्यंक्,

जृंभक नव लोकांतिक देवना ३०

त्रण किल्बिषिक बार देवलोक नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तरना

ए नवाणु पर्याप्त अपर्याप्त मळी, एकसो अठाणु देवना

नरक चौद तिर्यंच अडताळीश, मनुष्य त्रणसो त्रण सवि

पांचसो त्रेसठ जीव भेद थया, भवमुक्त था धर्म करी भवि ३१

पांच ईंद्रिय त्रण योग आयु श्वासोश्वास ए दश प्राण छे
प्राणनो वियोग ते मरण छे जीव योनि चोर्याशी लाख छे
सिद्धोने शरीर आयु स्वकाय स्थिति, प्राण योनि ए कांई नहीं
सादि अनंत स्थिति अनंत सुखमां, रमे लोकांते मोक्ष महीं ३२
अनंतवार अनंत दुःख सह्यां, जीवे धर्म कर्या विना
कर धर्म टळे दुःख फळ मेळवी, घाटकोपर पार्श्व-प्रासादना
बे हजार आडत्रीश जेठ सुदि पांचमे, रचेल मुंबईपुरीए
अचलगच्छपति आर्य कल्याण, गौतम नीति गुण सूरिए ३३

इति जीवविचार प्रकरणनो गुर्जरभाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

जीवविचार मूल

भुवणपइवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं;
जीवसरूवं किंचि वि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं. १
जीवा मुत्ता संसारिणो य, तस थावरा य संसारी;
पुढवी जल जलण वाउ, वणस्सइ थावरा नेया. २
फलिहमणिरयणविद्दुम, हिंगुल हरियाल मणसिलरसिंदा;
कणगाइ धाऊ सेढी, वन्निय अरणेट्टय पलेवा. ३
अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी-पाहाण-जाइओ णेगा;
सोवीरंजण लुणाई, पुढवीभेआइ इच्चाइ. ४
भोमंतरिक्ख-मुदगं, ओसा हिम करग हरितणु महिआ;
हुंति घणोदहिमाइ, भेयाणेगा य आउस्स. ५
इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाइआ;
अगणिजियाणं भेया, नायव्वा निउणबुद्धिए. ६
उब्भामग उक्कलिया, मंडली मह सुद्ध गुंजवाया य;
घण-तणुवायाइआ, भेया खलु वाउकायस्स. ७

साहारण पत्तेआ, वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया;
जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा ते उ. ८
कंदा अंकुर किसलय पणगा सेवाल भूमिफोडा य;
अल्लयतिय गज्जर मोत्थ, वत्थुला थेग पल्लंका. ९
कोमलफलं च सव्वं, गूढसिराइं सिणाइ-पत्ताइं;
थोहरि कुंआरि गुग्गुलि, गलोय पमुहाई छिन्नरूहा. १०
इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं;
तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेअं सुए भणियं. ११
गूढसिर-संधि-पव्वं, समभंगमहिरुगं च छिन्नरुहं;
साहारणं सरीरं, तव्विवरिअं च पत्तेयं. १२
एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया;
फल फूल छल्लि कट्ठा, मूलग पत्ताणि बीयाणि. १३
पत्तेयतरुं मुत्तुं, पंच वि पुढवाइणो सयललोए;
सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताऊ अद्दिस्सा. १४
संख कवकड्डय गंडुल, जलोय चंदणग अलस लहगाइ;
मेहरि किमि पूअरगा, बेइंदिय माइवाहाई. १५

गोमी मंकण जूआ, पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा;
इल्लिय घयमिल्लीओ, सावय गोकीड जाइओ. १६
गद्दहय चोरकीडा, गोमयकीडाय धन्नकीडा य;
कुंथु गोवालिय इलीया, तेइंदिय इंदगोवाई. १७
चउरिंदिया य विच्छू, ढिंकुण भमरा य भमरिया तिड्डा;
मच्छिय डंसा मसगा, कंसारि कविलडोलाई. १८
पंचिंदिया य चउहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य;
नेरइया सत्तविहा, नायव्वा पुढवी भेएणं. १९
जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचिंदिया तिरिक्खा य;
सुसुमार मच्छ कच्छव, गाहा मगरा य जलचारी. २०
चउपय उरपरिसप्पा, भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा;
गो सप्प नउलपमुहा, बोधव्वा ते समासेणं. २१
खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी य पायडा चेव;
नरलोगाओ बाहिं, समुग्गपक्खी वियपक्खी. २२
सव्वे जल-थल-खयरा, समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति;
कम्मा-कम्मगभूमि, अंतरदीवा मणुस्सा य. २३

दसहा भवणाहिवई, अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति;
जोइसिया पंचविहा, दुविहा वेमाणियादेवा. २४
सिद्धा पनरसभेया, तित्था-तित्थाइ सिद्धभेएणं;
एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समक्खाया. २५
एएसिं जीवाणं, सरीरमाउ ठिई सकायंमि;
पाणाजोणिपमाणं, जेसिं जं अत्थि तं भणिमो. २६
अंगुलअसंखभागो, सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं;
जोयण सहस्समहियं, नवरं पत्तेयरुक्खाणं. २७
बारसजोयण तिन्नेव, गाउआ जोयणं च अणुक्कमसो;
बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देहमुच्चत्तं. २८
धणुसयपंचपमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए;
तत्तो अद्धद्धुणा, नेया रयणप्पहा जाव. २९
जोयण सहस्समाणा, मच्छा उरगा य गब्भया हुंति;
धणुहपुहुत्तं पक्खीसु, भुयचारी गाउअपुहुत्तं. ३०
खयरा धणुहपुहुत्तं, भुयगा उरगा य जोयणपुहुत्तं;
गाउअपुहुत्तमित्ता, समुच्छिमा चउप्पया भणिया. ३१

छच्चेव गाउआइं, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा;
कोसतिगं च मणुस्सा, उक्कोससरीरमाणेणं. ३२
इसाणंतसुराणं, रयणीओ सत्त हुंति उच्चत्तं;
दुग दुग दुग चउगेविज्जणुत्तरे इक्किक्कपरिहाणी. ३३
बावीसा पुढवीए, सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स;
वाससहस्सा दस तरुगणाण तेउ तिरत्ताऊ. ३४
वासाणि बारसाऊ, बेइंदियाणं तेइंदियाणं तु;
अउणापन्नदिणाइं, चउरिंदीणं तु छम्मासा. ३५
सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं;
चउपयतिरियमणुस्सा, तिन्नि य पलिओवमा हुंति. ३६
जलयर-उर भुयगाणं, परमाऊ होइ पुव्व कोडीओ;
पक्खीणं पुण भणिओ, असंखभागो य पलियस्स. ३७
सव्वे सुहुमा साहारणा य, समुच्छिमा मणुस्सा य;
उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चिय जियंति. ३८
ओगाहणाउ-माणं, एवं संखेवओ समक्खायं;
जे पुणइत्थ विसेसा, विसेससुत्ताउ ते नेया. ३९

एगिंदिया य सव्वे, असंख-उस्सप्पिणी सकायंमि;
उववज्जंति चयंति य अणंतकाया अणंताओ. ४०
संखिज्ज समा विगला, सत्तट्ठभवापणिंदितिरिमणुआ;
उववज्जंति सकाए, नारय देवाय नो चेव. ४१
दसहा जियाण पाणा, इंदिय ऊसास आउ बलरूआ;
एगिंदिएसु, चउरो, विगलेसु छ सत्त अट्ठेव. ४२
असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु, नव दस कमेण बोधव्वा;
तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं भन्नए मरणं. ४३
एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि भीमंमि;
पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्त धम्मेहिं. ४४
तह चउरासीलक्खा, संखा जोणीण होइ जीवाणं;
पुढवाईणं चउण्हं, पत्तेयं सत्त सत्तेव. ४५
दस पत्तेयतरुणं, चउदसलक्खा हवंति इयरेसु;
विगलिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदितिरियाणं. ४६
चउरो चउरो नारय, सुरेसु मणुआण चउदस हवंति;
संपिंडिया य सव्वे, चुलसीलक्खा उ जोणीणं. ४७

सिद्धाणं नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाण जोणीओ;
साइअणंतातेसिं, ठिई जिणिंदागमे भणिआ. ४८
काले अणाइनिहणे, जोणिगहणंमि भीसणे इत्थ;
भमिया भमिहिंति चिरं, जीवा जिणवयण मलहंता. ४९
ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते;
सिरिसंतिसूरि सिट्ठे, करेह भो उज्जमंधम्मे. ५०
एसो जीववियारो, संखेवरुइण जाणणा हेऊ;
संखित्तो उद्धरिओ, रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ. ५१

इति जीवविचार प्रकरण संपूर्ण

जीवविचार प्रकरण अंगेनी कृतिओनी सूचि

कृति नाम ..... कर्ता नाम

जीवविचार प्रकरण ..... शांतिसूरि

जोवविचार प्रकरण-(सं.)लघुटीका .....अज्ञात जैनश्रमण

जोवविचार प्रकरण-(सं.)टीका .....रत्नाकर

जीवविचार प्रकरण-(सं.)टीका .....अज्ञात जैनश्रमण

जीवविचार प्रकरण-(सं.)सुबोधिनी टीका .....क्षमाकल्याण

जीवविचार प्रकरण-(सं.)अक्षरार्थदीपिका अवचूरि .....अज्ञात जैनश्रमण

जीवविचार प्रकरण-(सं.)अर्थलेश अवचूरि ...अज्ञात जैनश्रमण

जीवविचार प्रकरण-(सं.)अवचूरि .....अज्ञात जैनश्रमण

जीवविचार प्रकरण-(गु.)पद्यानुवाद ..... दक्षसूरि

जीवविचार प्रकरण-(अं.)गाथार्थ ..... जयंत पी. पाठक

जीवविचार प्रकरण-(गु.)अनुवाद . नारणदास खीमचंद मास्तर

जीवविचार प्रकरण-(गु.)विवेचन ..... मलयकीर्तिविजय

जीवविचार-(हिं.)अनुवाद .....व्रजलालजी

जीवविचार प्रकरण अंगेनी कृतिओनी सूचि

जीवविचारप्रकरण-(हिं.)शब्दार्थ ..... अध्यात्मजित्
जीवविचार प्रकरण-(गु.)विवेचन .....नरवाहनसूरि
जीवविचार प्रकरण-(गु.)विवेचन ... धीरजलाल टोकरशी शाह
जीवविचारप्रकरण-(हिं.)विवेचन .....हीरालाल दुग्गड
जीवविचारप्रकरण-(हिं.)पद्यानुवाद .....हीरालाल दुग्गड
जीवविचारप्रकरण-(गु.)विवेचन .....अमृतलाल पुरषोत्तमदास
जीवविचार प्रकरण-(मा.गु.)पद्यानुवाद ..... ज्ञानसार
जीवविचारप्रकरण-(हिं.)विवेचन .....देवेंद्रश्रीजी म. सा.
जीवविचारप्रकरण-(हिं.)पद्यानुवाद .....देवेंद्रश्रीजी म. सा.
जीवविचार प्रकरण-(मा.गु.)टबार्थ ..... हितरूचि
जीवविचार प्रकरण-(मा.गु.)टबार्थ .....जीवविजय
जीवविचार-(गु.)विवरण प्रश्नोत्तर .....नरवाहनसूरि
जीवविचारप्रकरण-(सं.)अन्वय ..... धीरजलाल टोकरशी शाह
जीवविचार प्रकरण-(गु.)पदार्थ संग्रह .....अज्ञात जैनश्रमण
जीवविचारना पदार्थो ..... धर्मगुप्तविजयजी म.
जीवविचार प्रवेशिका ..... धीरजलाल टोकरशी शाह
जीवविचार-(सं.)टीका-(अं.)अनुवाद ..... जयंत पी. पाठक

जीवविचार प्रकरण अंगेनी कृतिओनी सूचि

जीवविचारप्रकरण-(मा.गु.)टबार्थ ..... देवचंद
जीवविचार प्रकरण-(अं.)विवेचन .....हेमचंद्रसूरि
जीवविचार प्रकरण-(अं.)अनुवाद .....हेमचंद्रसूरि
जीवविचार प्रकरण-(मा.गु.)टबार्थ ..... ऋद्धिसागर
जीवविचार प्रकरण-पद्यानुवाद ..... कृष्णचंद
जीवविचार प्रकरण-(सं.)टीका ..... ईश्वराचार्य
जीवविचार प्रकरण-(हिं.)विवेचन ..... रत्नसेनविजय
जीवविचार प्रकरण-(हिं.)विवेचन ..... मनितप्रभसागरजी
जीवविचार प्रकरण-(हिं.)प्रश्नोत्तरी ..... मनितप्रभसागरजी

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- 500 पूजनप्रतो
- 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર

ARYA GRAPHICS - 09925801910